IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

जैविक हथियारों की घातकता एवं निवारण

डॉ. राजीव कुमार सिंह
सैन्य विज्ञान विभाग
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

शोध सारांशः

जैविक हथियार प्राकृतिक रूप से उपलब्ध तथा प्रयोगशाला में विकसित और उत्पादित की जा सकने वाले वे सूक्ष्म अवयव हैं, जो मानव एवं पशु–पक्षियों के शरीर में प्रवेश करके रोग पैदा कर सकते हैं तथा वनस्पतियों या फसलों को नष्ट कर सकते हैं, ये जैविक हथियार विषाणु, जीवाणु, कवक या प्रोटोजोआ युक्त हो सकते हैं। इन जैविक तत्वों का उत्पादन पुनर्ऊत्पादन और संवर्धन करना काफी आसान होता है तथा इन्हें एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र में हवा, जल व पशु–मानव संक्रमण द्वारा तेजी से फैलाया जा सकता है। परम्परागत सैन्य हथियोरों की तुलना में जैविक और रासायनिक हथियोरों की घातकता अधिक होती है। जिन लोगों पर इन हथियोरों से हमला किया जाता है, वे इनसे सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं तथा उनके पास इससे बचाव का कोई साधन नहीं होता। प्रस्तुत शोध–पत्र में इन्हीं बिन्दुओं का समावेश किया गया है।

मुख्य शब्द :–जैविक, हथियार, प्रयोगशाला, मानव, सूक्ष्म, अवयव, पशु, पक्षियों, रोग, घातक, वनस्पति, विषाणु, जीवाणु, कवक, भौगोलिक, हवा, जल, रासायनिक, इत्यादि।

संदर्भ स्रोत :–

[1]. ''युद्ध का अध्ययन'' : डॉ. सुरेन्द्र कुमार मिश्र पृ. क्र. 322–327
[2]. ''युद्ध एवं शान्ति की समस्याएं : डॉ. लल्लन जी सिंह पृ. क्र. 20–25
[3]. ''युद्ध का अध्ययन'' : डॉ. अशोक कुमार सिंह पृ. क्र. 1–32
[4]. ''सैन्य अध्ययन की पाठ्यपुस्तक'' : बाबूलाल पाण्डेय पृ. क्र. 30–36
[5]. ''युद्ध का अध्ययन'' : डॉ. एस.के. मिश्र पृ. क्र. 153–165
[6]. 6.''युद्ध की प्रकृति एवं उत्तरी अफ्रीका का संग्राम'' : डॉ. लल्लन जी सिंह, पृ. क्र. 53–62:
[7]. 5 ''प्रतियोगिता दर्पण'', जून–2008